अमर चित्र कथा

त्रिपुरा

माया की तीन महत्वपूर्ण शहरें

Vol 689 | ₹90

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी १० करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास–परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
लुइस फर्नान्डेस	राम वाइरकर	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1971, Reprinted June 2022
ISBN 978-93-90055-64-7

Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor, Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri East, Mumbai 400059, India.
For Consumer Complaints Contact Tel : +91-22 49188881/2
Email: customerservice@ack-media.com
Printed in India

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

त्रिपुरांतक शिव
देवताओं के सेनापति कार्तिकेय ने असुरराज तारकासुर का वध कर डाला। डरे हुए असुर भाग निकले।
उसके बाद शीघ्र ही तारकासुर के पुत्र तारकाक्ष, विद्युन्माली और कमलाक्ष ने तपस्या आरंभ की।
तपस्या चलती रही, मौसम बदलते गये। वे कृशकाय हो गये और उनकी नसें उभर आयीं।
फिर एक दिन, ब्रह्मा उनके सामने प्रकट हुए।
मैं तुम्हारी तपस्या से प्रसन्न हूँ।
जो वर चाहो, माँगो।
हमारे पराक्रमी पिता मारे गये।

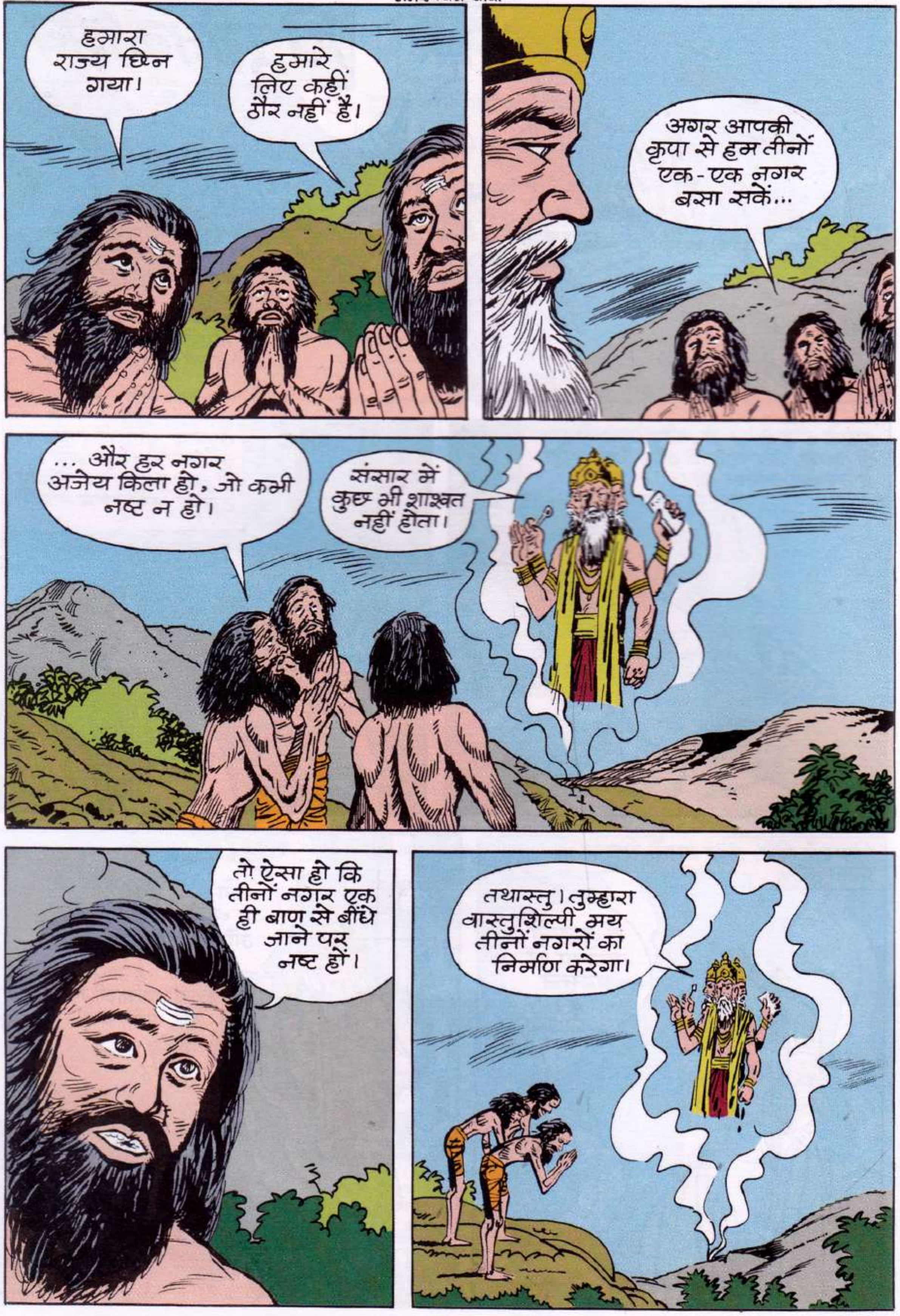
हमारा राज्य छिन गया।
हमारे लिए कहीं ठौर नहीं है।
अगर आपकी कृपा से हम तीनों एक-एक नगर बसा सकें...
... और हर नगर अजेय किला हो, जो कभी नष्ट न हो।
संसार में कुछ भी शाश्वत नहीं होता।
तो ऐसा हो कि तीनों नगर एक ही बाण से बींधे जाने पर नष्ट हों।
तथास्तु। तुम्हारा वास्तुशिल्पी मय तीनों नगरों का निर्माण करेगा।

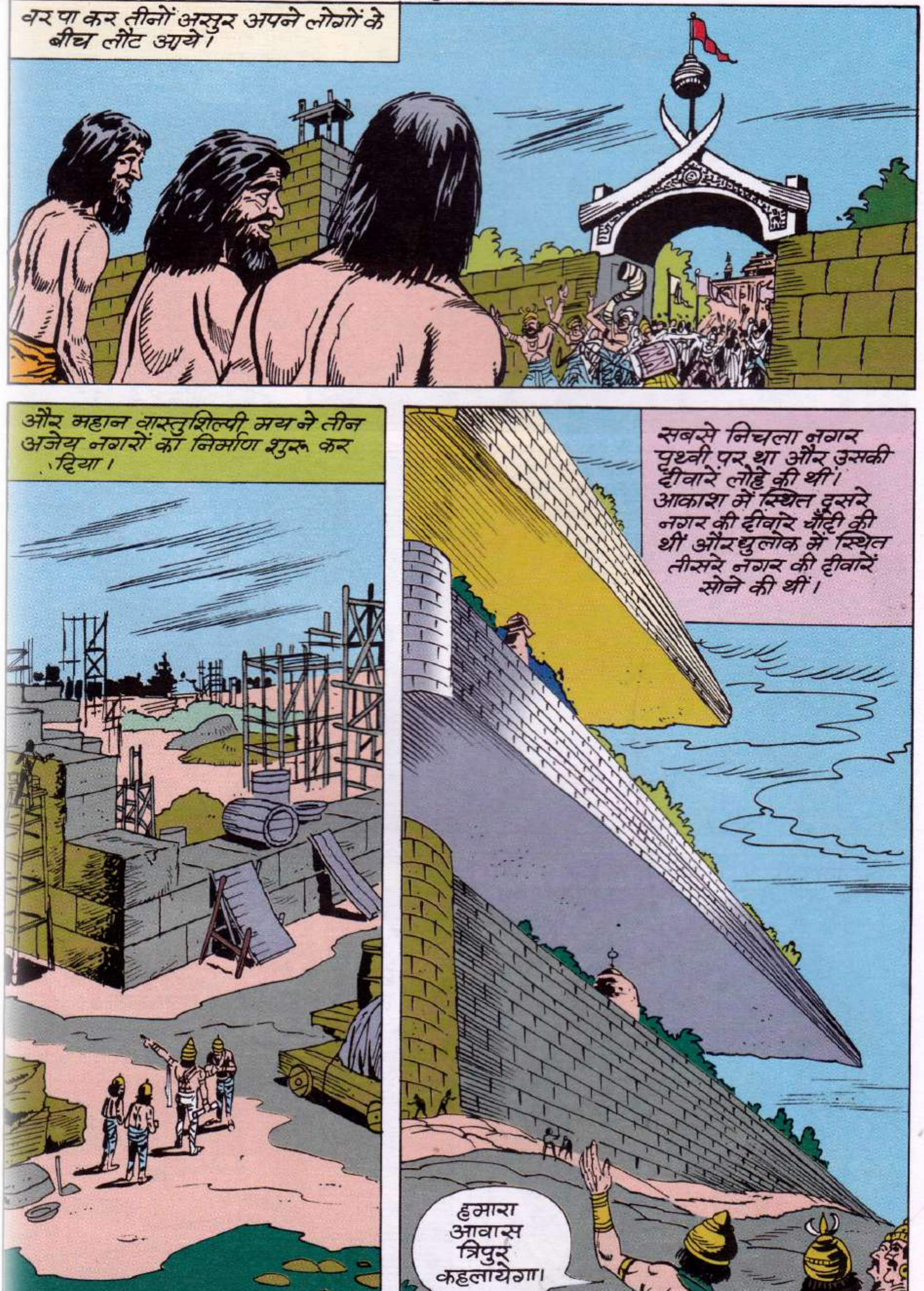
वर पा कर तीनों असुर अपने लोगों के बीच लौट आये।
और महान वास्तुशिल्पी मय ने तीन अजेय नगरों का निर्माण शुरू कर दिया।
सबसे निचला नगर पृथ्वी पर था और उसकी दीवारें लोहे की थीं। आकाश में स्थित दूसरे नगर की दीवारें चाँदी की थीं और द्युलोक में स्थित तीसरे नगर की दीवारें सोने की थीं।
हमारा आवास त्रिपुर कहलायेगा।

तीनों चलते-फिरते नगर हैं।
लेकिन तीनों इस तरह चलेंगे कि हज़ार वर्षों में सिर्फ एक बार पुष्य और चंद्रमा...
... के योग में एक सीध में आयेंगे- वरना कभी नहीं।
यानी हम पूरी तरह सुरक्षित नहीं हैं...
भय की कोई बात नहीं। तीनों नगर एक सीध में पल-भर को ही आयेंगे।
और फिर अकेले शिव ही ऐसे हैं जो ऐसा मारक बाण चला सकते हैं।
हाँ। और वे हमें कभी मारेंगे नहीं; क्योंकि हम उनकी पूजा करते हैं।

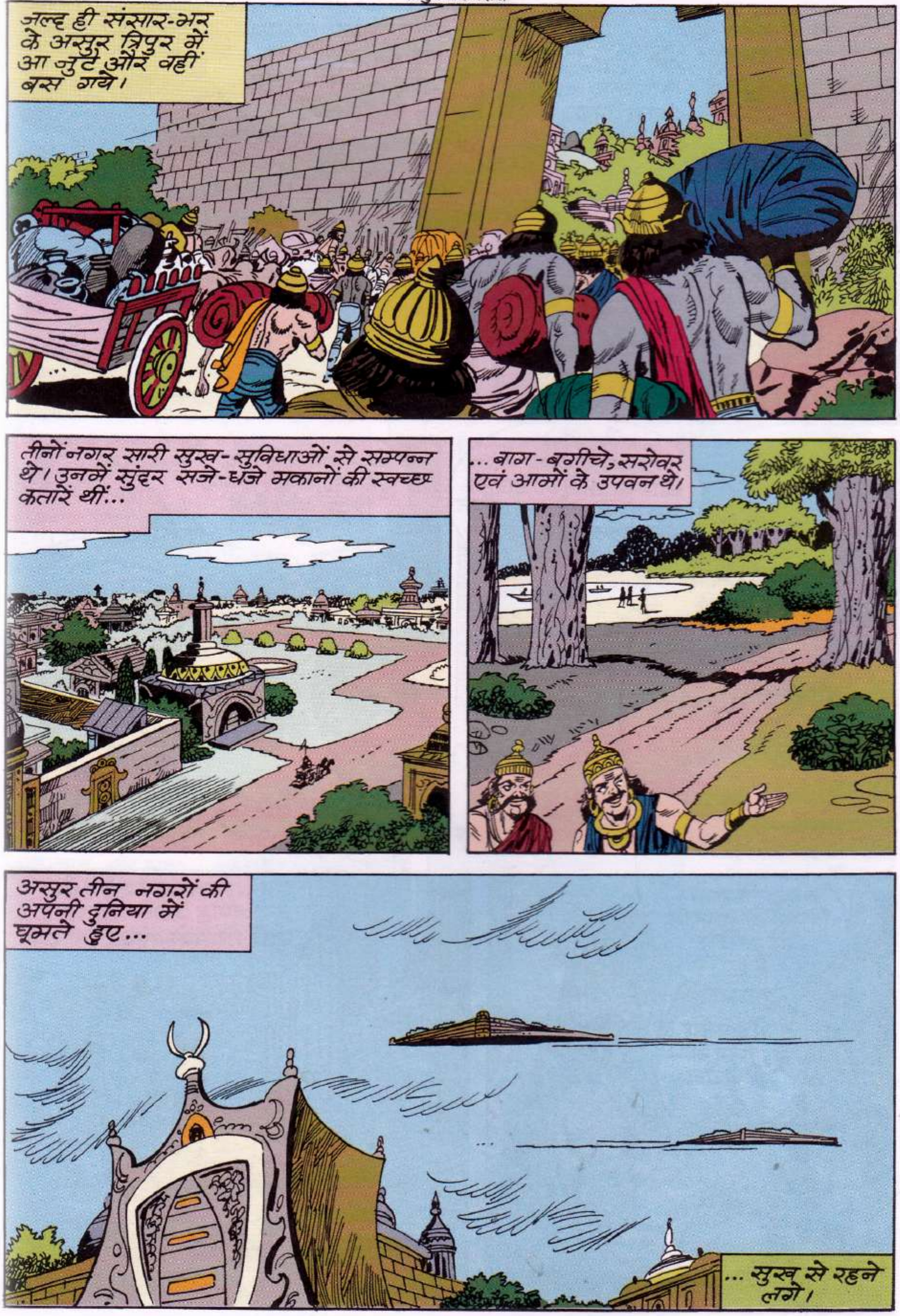
जल्द ही संसार-भर के असुर त्रिपुर में आ जुटे और वहीं बस गये।
तीनों नगर सारी सुख-सुविधाओं से सम्पन्न थे। उनमें सुंदर सजे-धजे मकानों की स्वच्छ कतारें थीं...
...बाग-बगीचे, सरोवर एवं आमों के उपवन थे।
असुर तीन नगरों की अपनी दुनिया में घूमते हुए...
...सुख से रहने लगे।

फिर एक दिन –
कल रात मैंने बड़ा भयंकर स्वप्न देखा।
हमारा नगर अंधकार में डूब गया...और सारे मकान समुद्र में डूब गये।
और मैंने देखा कि एक चौपाया आदमी ललाट पर रोली मले एक औरत का पीछा कर रहा है।
ये सब हमारे लिए बुरे सगुन हैं। हमारा त्रिपुर संकट में है।
संकट में?
संकट किससे? त्रिपुर तो वास्तव में अजेय है।
मैं जानता हूँ, फिर भी... मैं बेचैन हूँ।
हम धर्मपरायण रहें और हर जगह शांति बनाये रखें जिससे संकट टल सके।

मय के स्वप्न ने असुरों को बेचैन कर दिया।
मैंने तो सोचा था, हम यहाँ सुरक्षित हैं पर अब...
मय का कहना है कि हमें धर्मपरायण रहना चाहिए।
इतनी पीढ़ियों से हम धर्मपरायण नहीं थे क्या? क्या मिला हमें इससे?
आनंद का बुलबुला फूट गया और असंतोष एवं पुरानी घृणा उभरने लगी।
जरूर ऋषि और देव मिल कर हमारे विरुद्ध षड़-यंत्र रच रहे हैं।
वे हमारी उन्नति से जलते हैं।
इस तरह, जब मय अपना अधिकांश समय शिव की आराधना में बिता रहा था...
...असुरों ने पृथ्वी पर आक्रमण करने शुरू कर दिये...

... और स्वर्ग पर भी।
उन्होंने पूरे-पूरे शहर नष्ट कर दिये और उनके नागरिकों को लूट लिया।
तीनों लोकों की शांति भंग हो गयी।
अंत में इन्द्र एवं देवतागण ब्रह्मा की शरण में गये।
असुर बेधड़क होकर हम पर आक्रमण कर रहे हैं।
उन्हें पता है, हम प्रतिकार नहीं कर सकते।
त्रिपुर अजेय है।
नहीं, वह अजेय नहीं है। एक ही बाण से वह नष्ट हो सकता है।

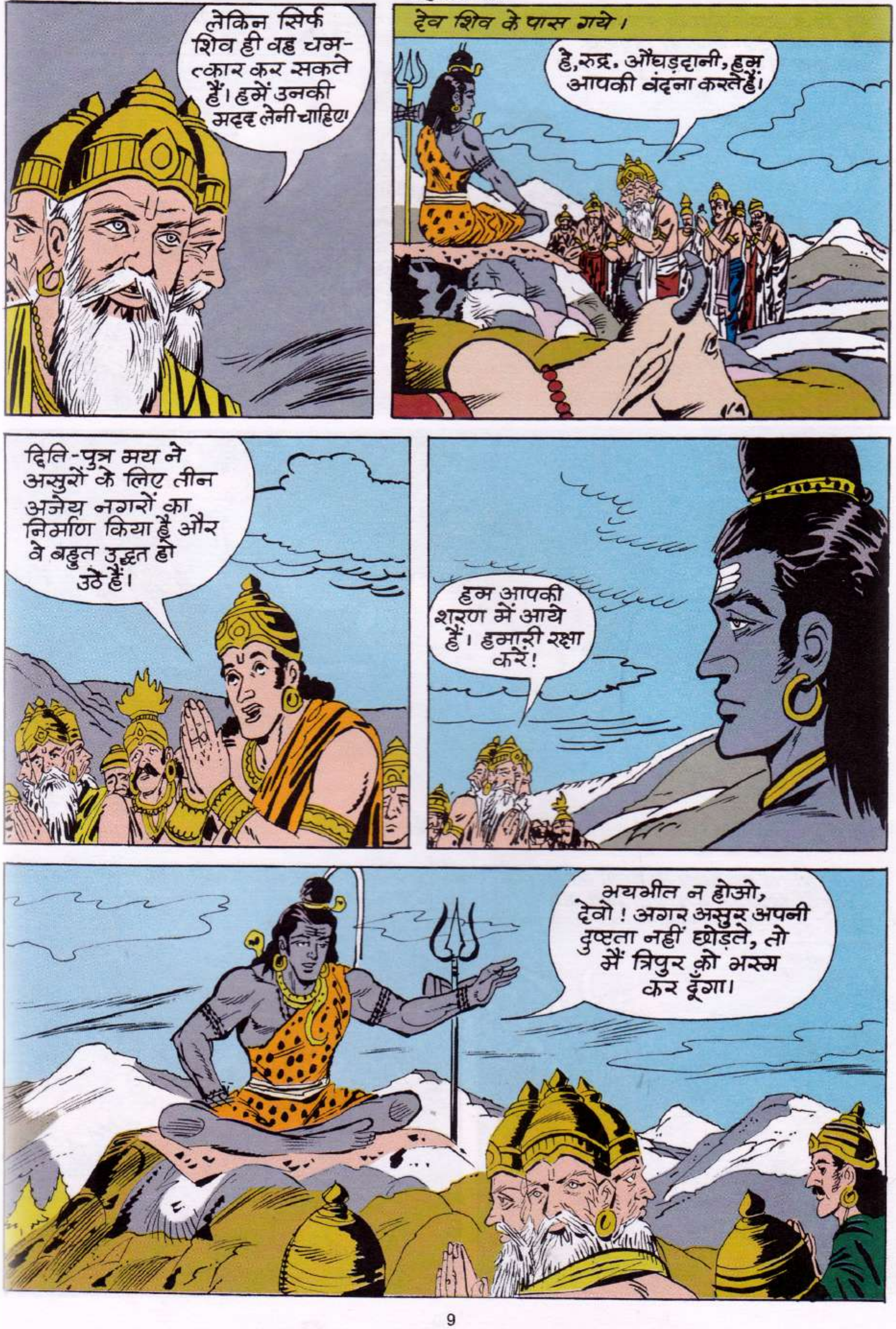
लेकिन सिर्फ शिव ही वह चमत्कार कर सकते हैं। हमें उनकी मदद लेनी चाहिए।
देव शिव के पास गये।
हे, रुद्र, औघड़दानी, हम आपकी वंदना करते हैं।
दिति-पुत्र मय ने असुरों के लिए तीन अजेय नगरों का निर्माण किया है और वे बहुत उद्धत हो उठे हैं।
हम आपकी शरण में आये हैं। हमारी रक्षा करें!
भयभीत न होओ, देवो! अगर असुर अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते, तो मैं त्रिपुर को भस्म कर दूँगा।

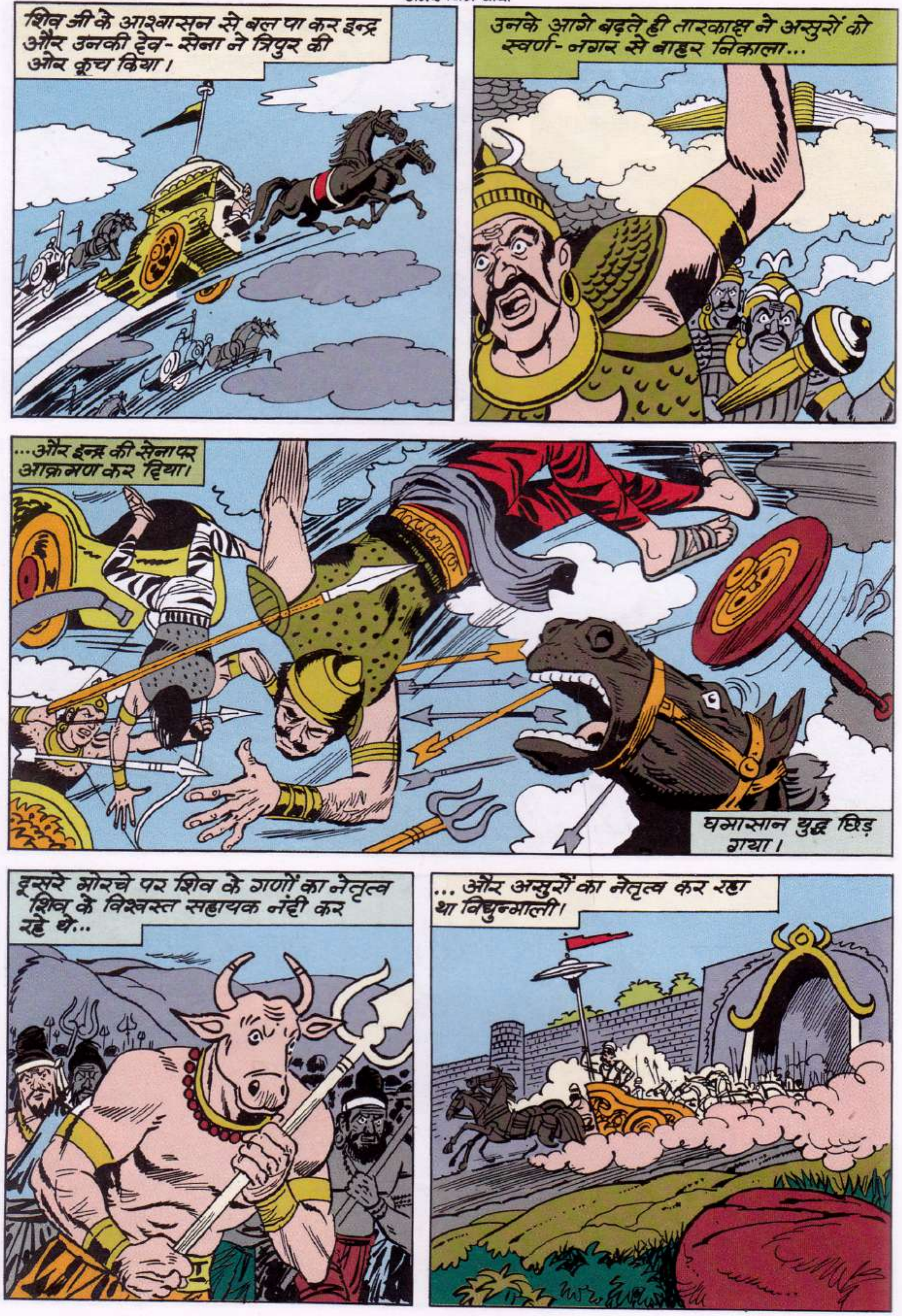
शिव जी के आश्वासन से बल पा कर इन्द्र और उनकी देव-सेना ने त्रिपुर की ओर कूच किया।
उनके आगे बढ़ते ही तारकाक्ष ने असुरों को स्वर्ण-नगर से बाहर निकाला...
...और इन्द्र की सेना पर आक्रमण कर दिया।
घमासान युद्ध छिड़ गया।
दूसरे मोरचे पर शिव के गणों का नेतृत्व शिव के विश्वस्त सहायक नंदी कर रहे थे...
... और असुरों का नेतृत्व कर रहा था विद्युन्माली।

असुर-नेता ने नंदी पर भयंकर प्रहार किया।
लेकिन नंदी ने तुरंत सँभल कर विद्युन्माली पर छलाँग लगा दी और उसे घातक रूप से घायल कर दिया।
आऽऽह!
शत्रु हम पर भारी पड़ रहे हैं।
मय ने अपनी शक्ति से आग पैदा की।
फिर भी देव बढ़ते ही आ रहे हैं।

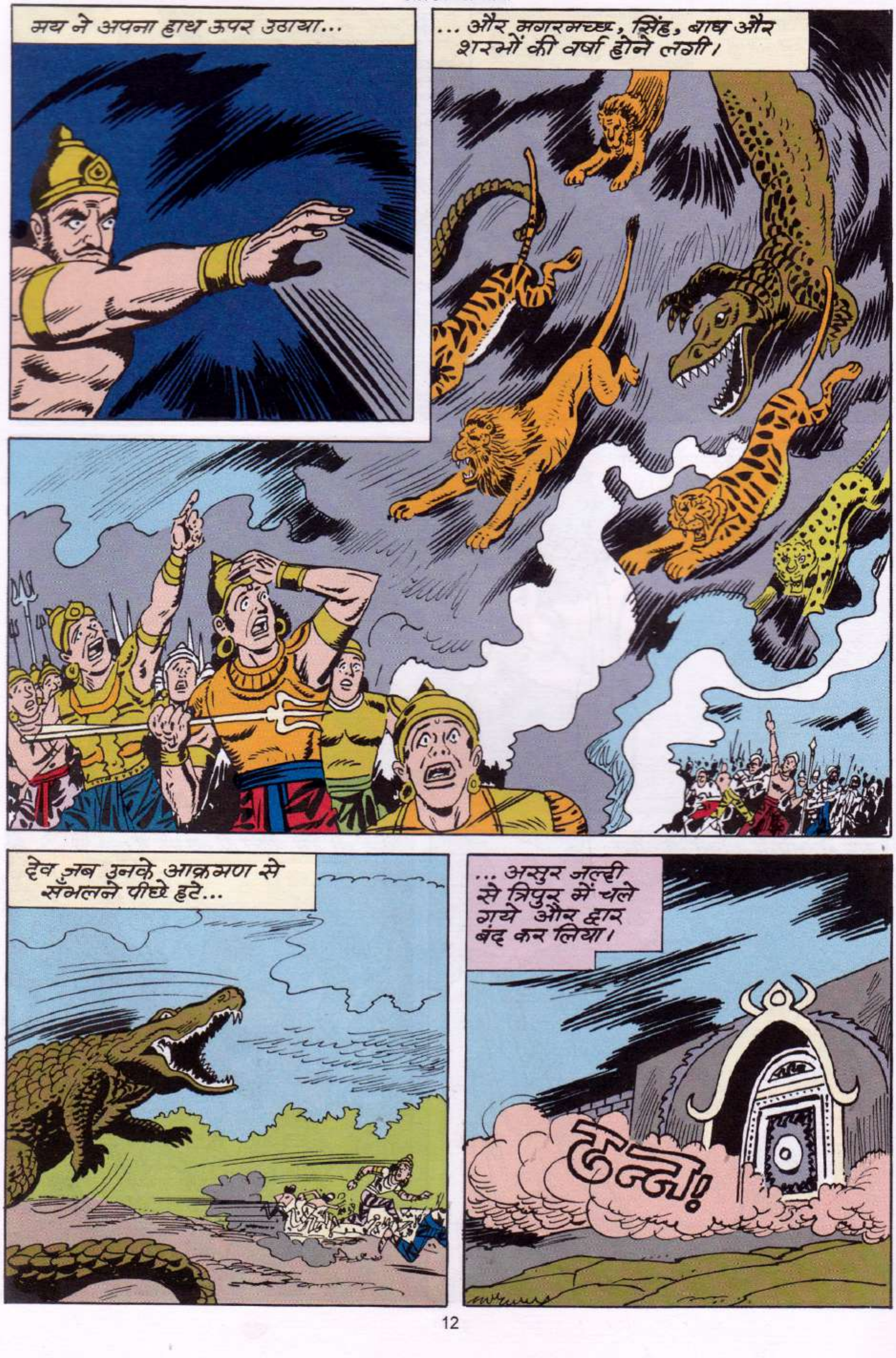
मय ने अपना हाथ ऊपर उठाया...
... और मगरमच्छ, सिंह, बाघ और शरभों की वर्षा होने लगी।
देव जब उनके आक्रमण से सँभलने पीछे हटे...
... असुर जल्दी से त्रिपुर में चले गये और द्वार बंद कर लिया।
ढन्न!

हमारे पक्ष की बहुत क्षति हुई है! विद्युन्माली मारा गया!
मैंने एक सरोवर का निर्माण किया है, जिसके जल के स्पर्श से मृतक पुनः जी उठेंगे।
विद्युन्माली और सभी मृतकों को यहाँ ले आओ।
मृत असुरों को उस सरोवर में डुबाया गया...
...और फिर!
मैं कहाँ हूँ?

वह साँड़ कहाँ है?
युद्ध के लिए अभी भी इतना उत्साह!
ओह, विद्युन्माली! मुझे तुम प्राणों से भी प्यारे हो!
सुनो, मेरे वीरो, मय की कृपा से तुम्हें अब मृत्यु से डरने की जरूरत नहीं!
बाहर जाओ और देवों को नगर के द्वार से दूर खदेड़ दो।
असुर त्रिपुर से निकल पड़े।

पृष्ठ 19 पर जारी

और उन्होंने देवों पर इतना प्रचंड आक्रमण किया...

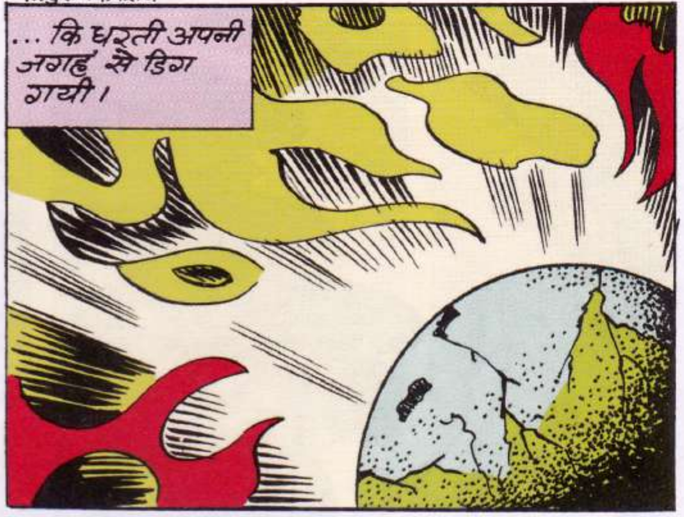
... कि धरती अपनी जगह से डिग गयी।

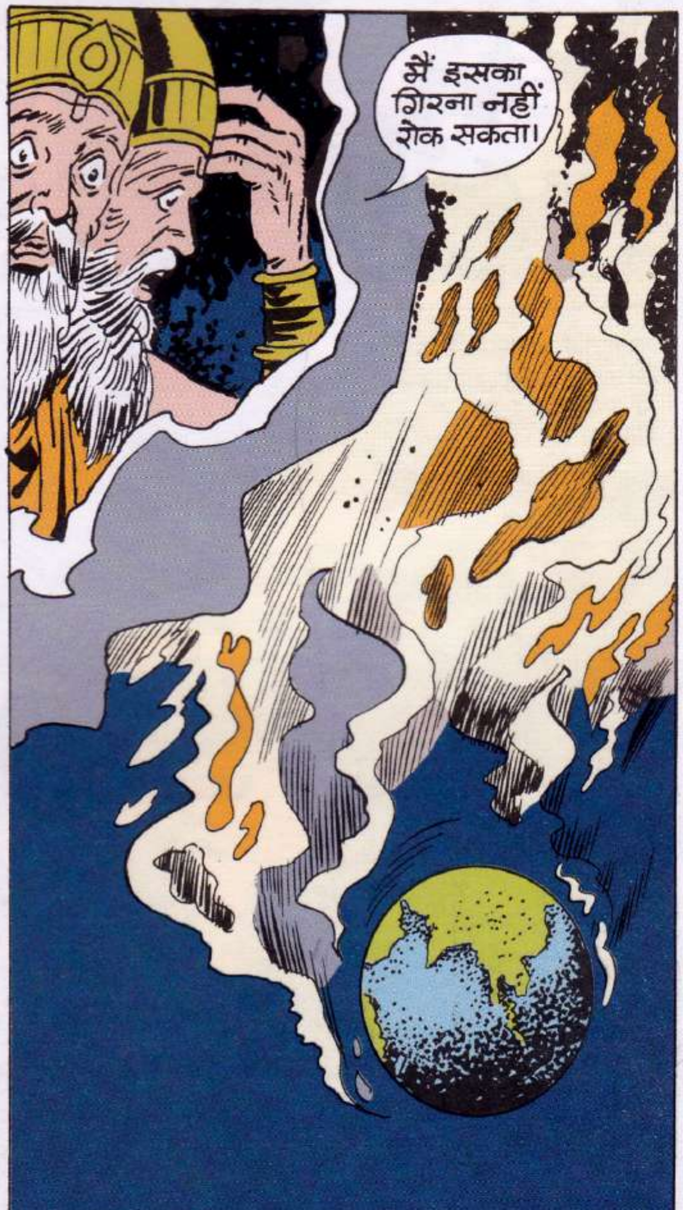
मैं इसका गिरना नहीं रोक सकता।

अचानक –
ये तो भगवान् विष्णु हैं!
विष्णु ने वृषभ के रूप में धरती को उठा कर यथास्थान रख दिया।

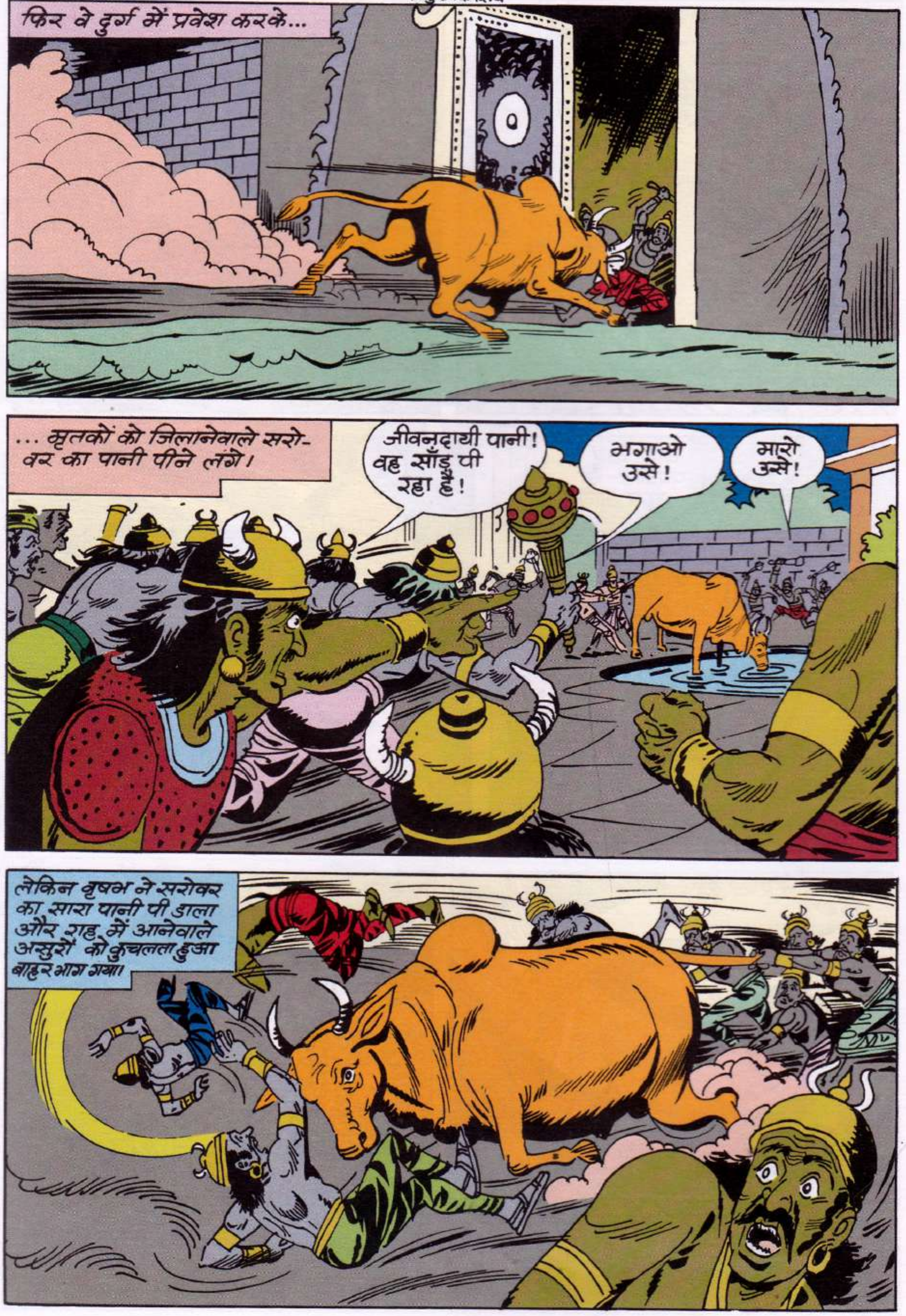
फिर वे दुर्ग में प्रवेश करके...
... मृतकों को जिलानेवाले सरोवर का पानी पीने लगे।
जीवनदायी पानी! वह साँड पी रहा है!
भगाओ उसे!
मारो उसे!
लेकिन वृषभ ने सरोवर का सारा पानी पी डाला और राह में आनेवाले असुरों को कुचलता हुआ बाहर भाग गया।

शीघ्र ही देव असुरों को काटते हुए आगे बढ़े...
...और सबसे निचले नगर, लौह-नगर, में प्रवेश कर गये।
अरे! शत्रु परकोटे में घुस आये हैं!
तारकाक्ष ने प्रचंड युद्ध किया...
...और शत्रुओं को भागना पड़ा।

दूसरे मोरचे पर, असुर पीछे हटने ही वाले थे...
... कि अचानक-
मय और विद्युन्माली!
मय और विद्युन्माली ने शत्रुओं में तबाही मचा दी।
और घबराहट में देवता तितर-बितर हो गये।
आज अशुभ दिन है।

शाम होने को आयी तो मय ने असुरों को त्रिपुर में बुला लिया।
बाकी युद्ध कल निबटा देंगे।
कल ही वह दिन है, जब हमारे तीनों नगर पल-भर को एक सीध में आयेंगे।
शिव स्वयं युद्ध में उतरेंगे।
अगर हम उस खास क्षण में उन्हें अपना घातक बाण चलाने से रोक सकें, तो फिर भय की कोई बात नहीं।
त्रिपुर में उस रात सब आनंद मना रहे थे। असुरों को अपनी जीत का पूरा भरोसा था। सिर्फ मय विचारमग्न था।
अंत निकट है। त्रिपुर के दिन पूरे हो रहे हैं।
लेकिन मैं अंत तक लड़ूंगा।

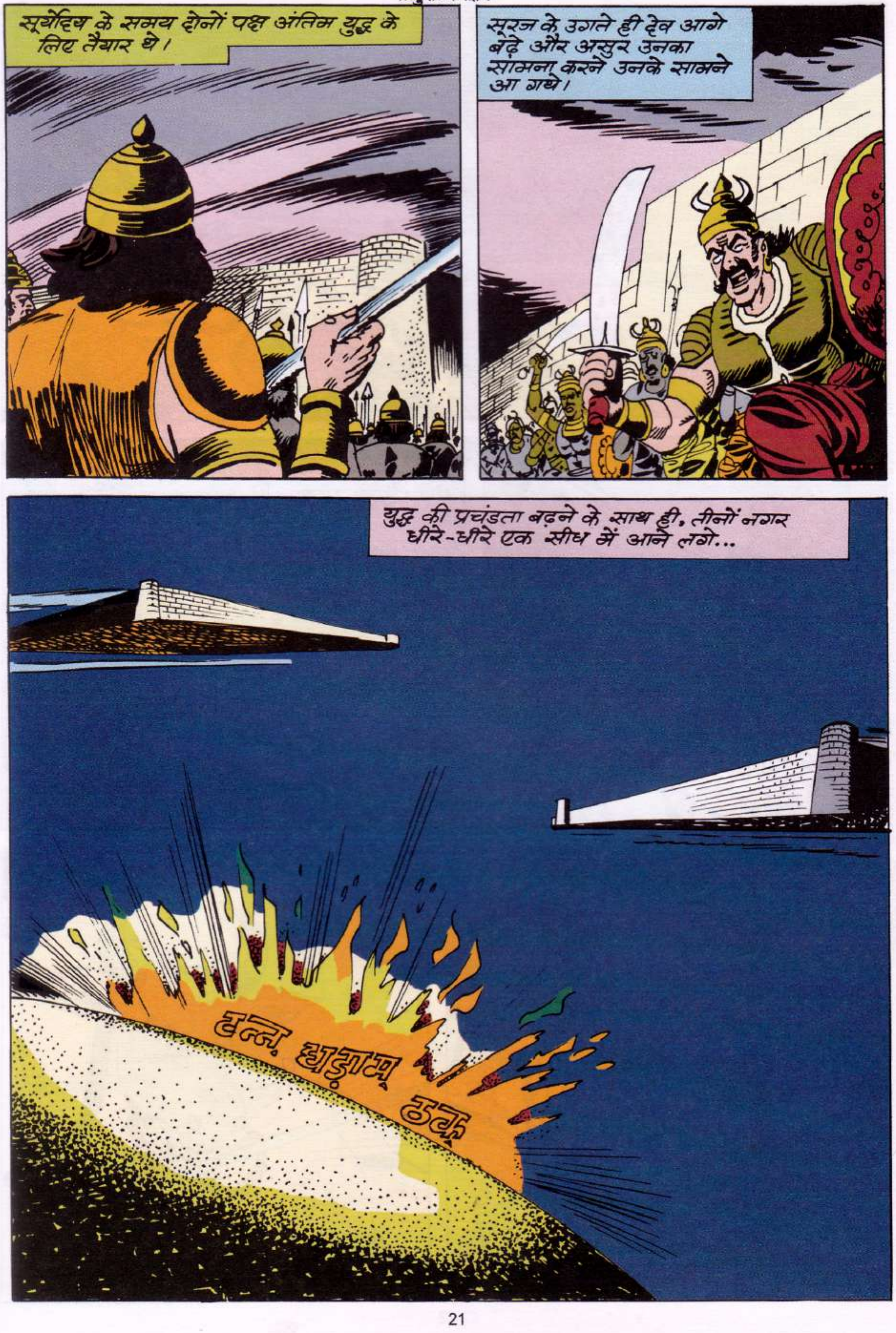
सूर्योदय के समय दोनों पक्ष अंतिम युद्ध के लिए तैयार थे।
सूरज के उगते ही देव आगे बढ़े और असुर उनका सामना करने उनके सामने आ गये।
युद्ध की प्रचंडता बढ़ने के साथ ही, तीनों नगर धीरे-धीरे एक सीध में आने लगे...
ढन्न, धड़ाम ठक्

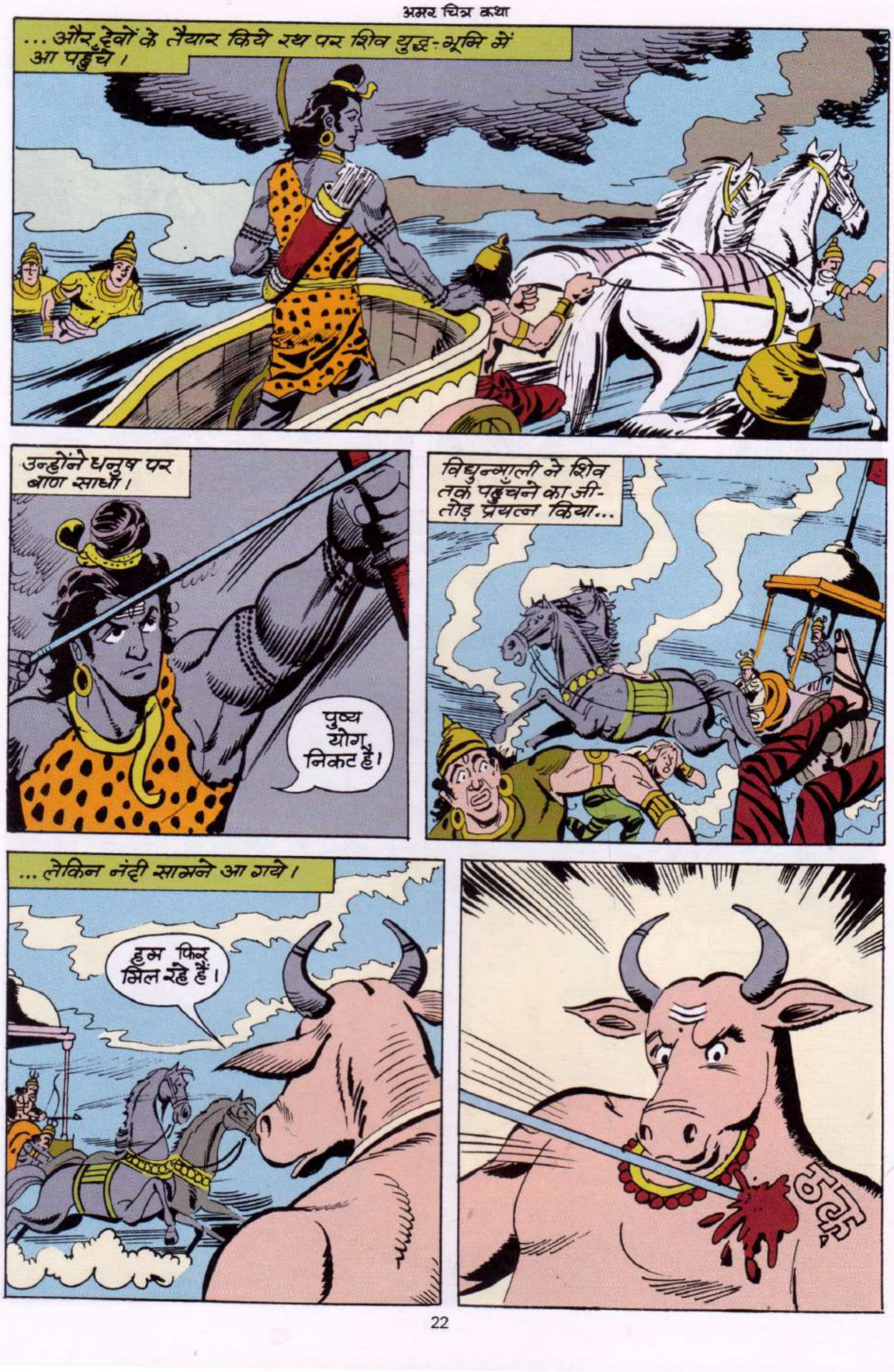
... और देवों के तैयार किये रथ पर शिव युद्ध-भूमि में आ पहुँचे।
उन्होंने धनुष पर बाण साधा।
पुष्य योग निकट है।
विद्युन्माली ने शिव तक पहुँचने का जी-तोड़ प्रयत्न किया...
... लेकिन नंदी सामने आ गये।
हम फिर मिल रहे हैं।

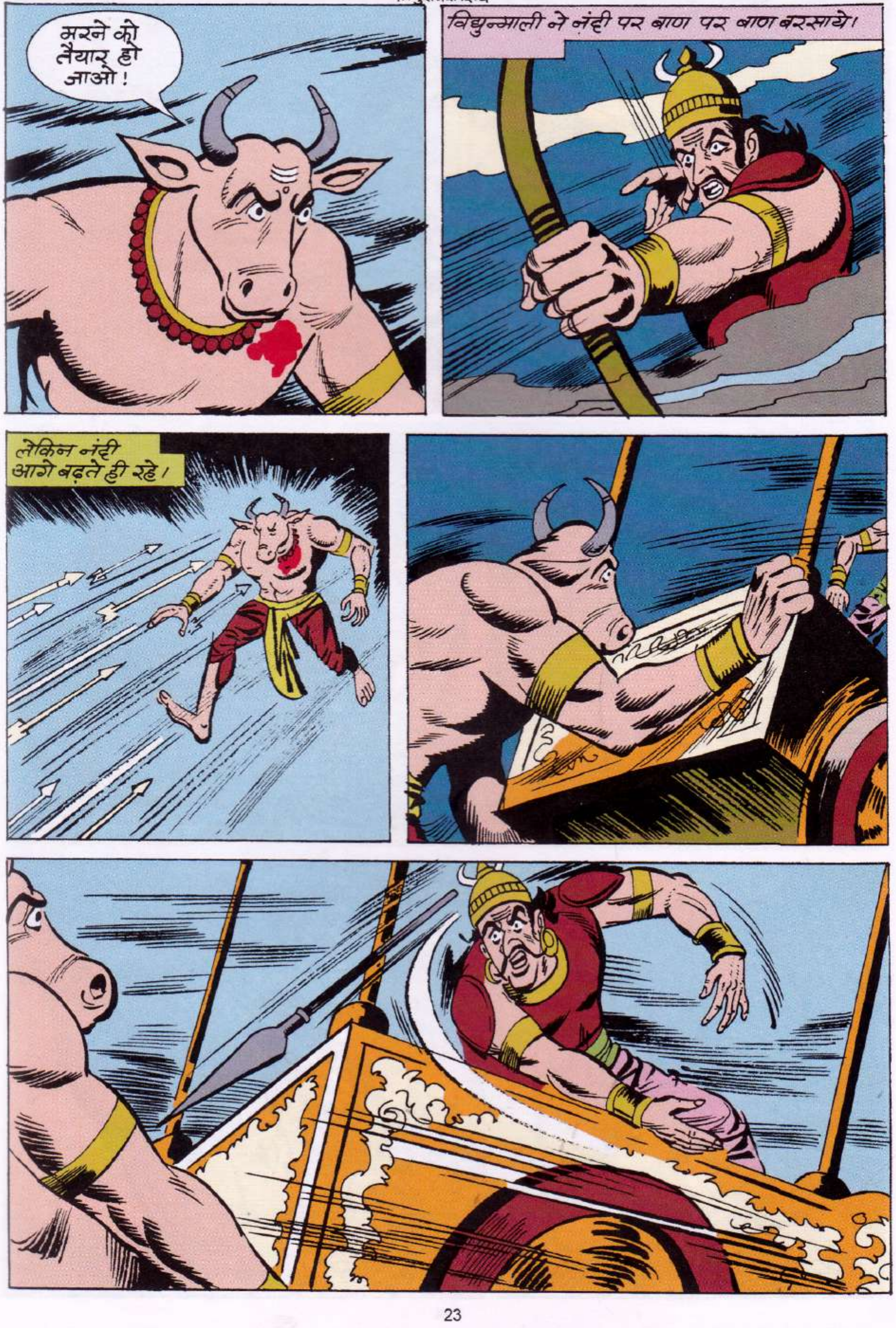
मरने को तैयार हो जाओ !
विद्युन्माली ने नंदी पर बाण पर बाण बरसाये।
लेकिन नंदी आगे बढ़ते ही रहे।

शिव बाण छोड़ने को तैयार हैं।
विद्युन्माली!
ऐं!
आऽऽह!
तीनों नगर एक सीध में हैं।

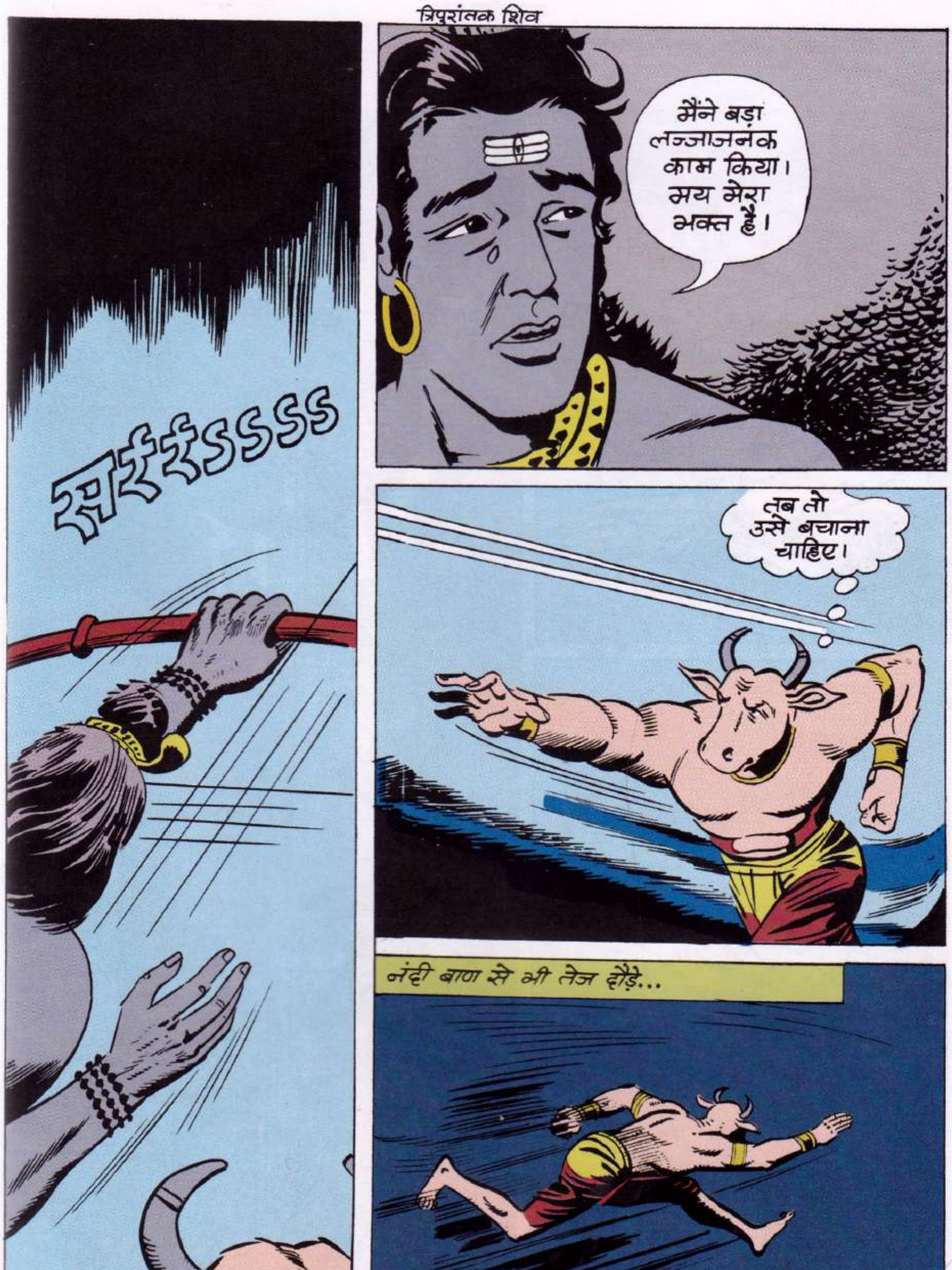
सर्र्रऽऽऽऽ
मैंने बड़ा लज्जाजनक काम किया। मय मेरा भक्त है।
तब तो उसे बचाना चाहिए।
नंदी बाण से भी तेज दौड़े...

...और चिल्लाकर मय को सावधान कर दिया।
बाण छूट चुका है। भाग निकलो!
मय बच निकला, लेकिन उसके बनाये तीनों नगर, वे तीनों असुरराज और उनकी प्रजा, सब जलकर भस्म हो गये।

भारत, जिससे आप अनजान हैं
सिक्के का जन्म

शब्द: स्वर्ण खांडपुर

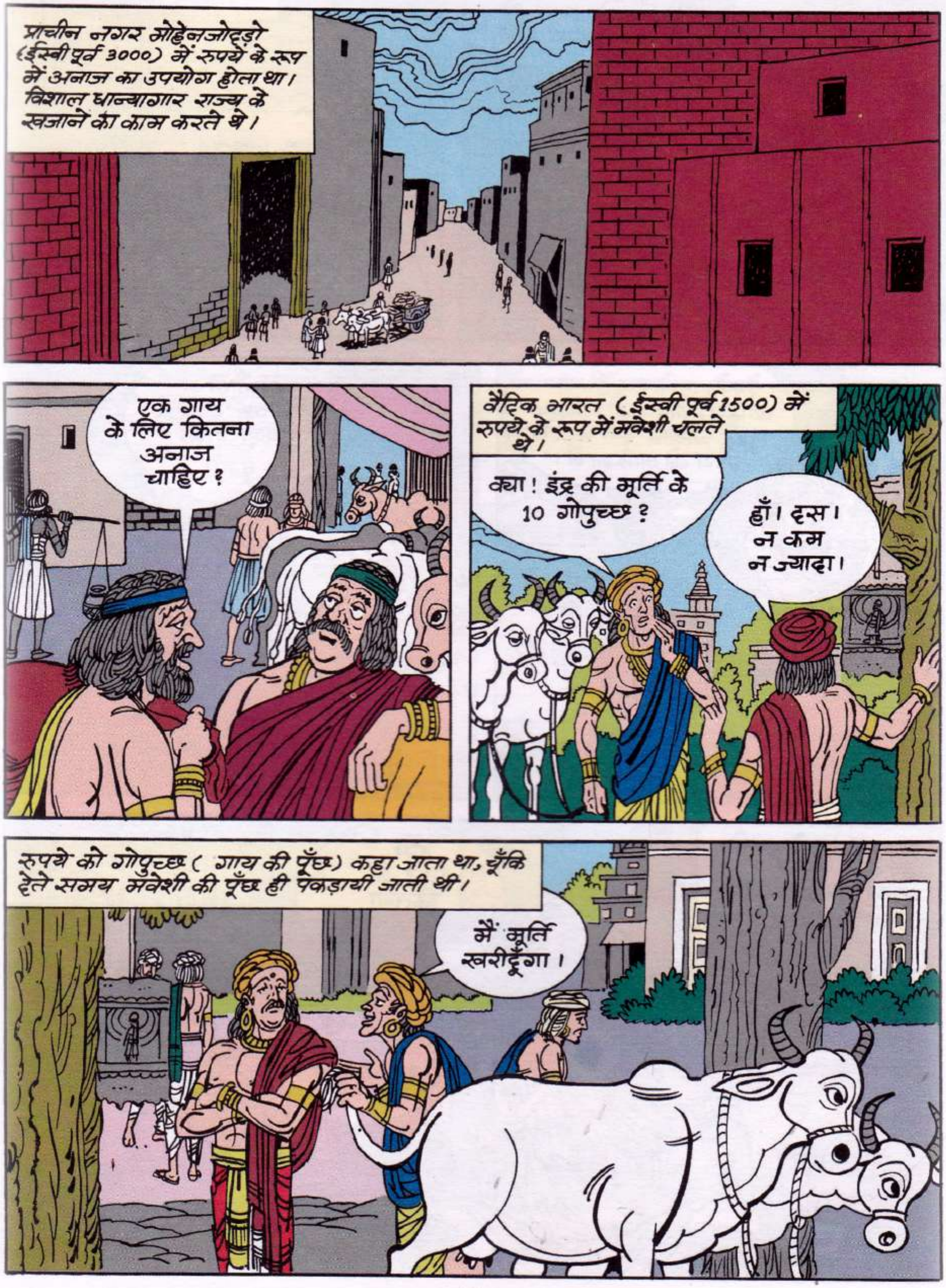

लेकिन इससे कभी - कभी समस्या खड़ी हो जाती थी।
इस ताम्रपात्र का मूल्य चौथाई गाय है।
चौथाई गाय ? तुम्हारा मतलब है मुझे गाय को मारना होगा ?
इससे अच्छा तो चार पात्र खरीद लो।
देखो, मुझे एक ही पात्र चाहिए, चार नहीं। और न तुम्हें चौथाई देने के लिए गाय को मारूँगा मैं।
बदले में मैं 'निष्क' का एक टुकड़ा तुम्हें दूँगा।
निष्क धातु के टुकड़ों का बना गले का एक आभूषण होता था।
बाद में इसके टुकड़े रुपये के रूप में चलने लगे।
इस टुकड़े का कितना वजन होगा ?
मैं नहीं जानता। कृपा कर के पता लगा लें।

ठीक एक कृष्णला के बराबर है।
कृष्णला एक तरह का बीज (गुंजा) होती है और आजकल रत्ती के रूप में जानी जाती है। अन्य बीज और धान्य जैसे यव (जौं), तांदुल (चावल), और माशा (उड़द) भी वजन के काम आते थे।
लोगों को हर लेन-देन के समय हमेशा धातु के टुकड़े को तौलना बड़ा नीरस काम लगा। इसलिए एक निश्चित वजन के धातु के रुपयों का प्रचलन हुआ।
इन टुकड़ों को तौलने की जरूरत नहीं। हर टुकड़ा एक शतमान के बराबर है।
शतमान में सौ इकाई होती थी और यह आज के मेट्रिक पद्धति का अग्रदूत था। लेकिन शतमान से भी समस्याएँ उठतीं। लोग बहुत सतर्क रहते थे।
क्या तुम्हें विश्वास है कि धातु शुद्ध है और वजन सही है? बेहतर है, मैं इसे तौल लूँ और कसौटी पर कस लूँ।
सही वजन और शुद्धता के प्रमाण के रूप में धीरे-धीरे उस टुकड़े पर एक जिम्मेदार अधिकारी का चिह्न अंकित होने लगा।
तौलने की जरूरत नहीं। इसपर चिह्न अंकित है।
चीन और लीडिया में बनने के बहुत पहले सिक्कों का जन्म भारत में हुआ था। पाणिनि के अष्टाध्यायी में निष्क, शतमान और पद के रूप में सिक्कों का वर्णन है।

महाकाव्यों और
पौराण्क कथा

त्रिपुरा

असुरों ने आनन्दित होते हुए दोनों पुरुषों और देवताओं के साथ कहर ढाया। माया, उनके प्रतिभाशाली वास्तुकार, ने उनके लिए लोहे, चांदी और सोने से बने तीन कट्टे बनाए थे, और महान स्वामी ब्रहमा ने स्वयं यह तर्णय लिया था कि ये शहर अविनाशी होंगे, जब तक कि एक एकल तीर दवारा मारा नहीं जाता। तीनों शहर, नज़हें त्रिपुरा के रूप में जाना जाता है, पृथ्वी की पररक्रमा करते हैं, और केवल एक हजार वर्षों में एक बार एक सीधी रेखा में मारते हैं, सीधे एक दूसरे से ऊपर। क्या लक्ष्य अपने घातक धनुष की एक टहनी के साथ उह` नष्ट करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं?

ए सी के: के अनय महाकाव्यों और पौरारि`क कथा:

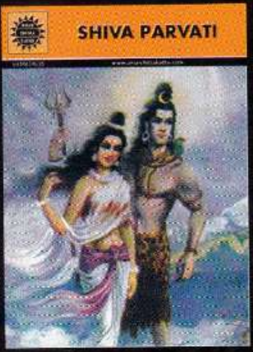

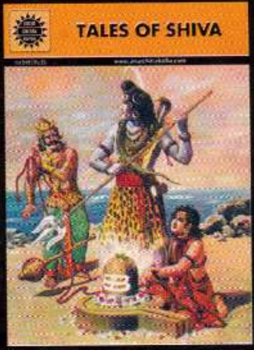

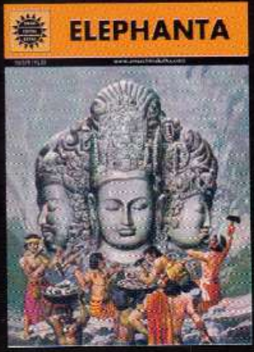

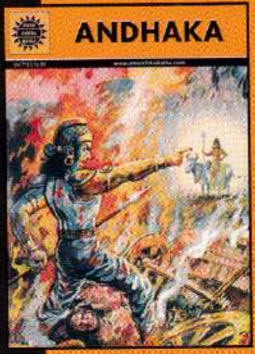

और भी देखें:

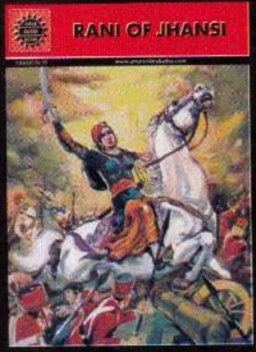

बहादुर दिल

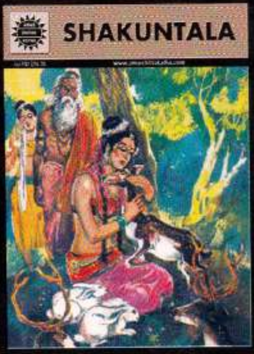

भारतीय क्लासिक्स

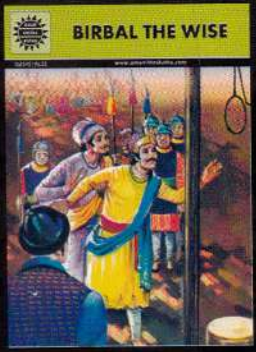

दंतकथाएँ और
हास्य कथाएँ

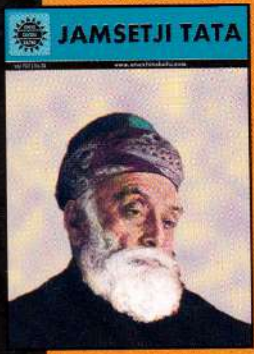

दूरदर्शी

www.amarchitrakatha.com ऑनलाइन पर खरीदें

ISBN 978-93-90055-64-7
9 789390 055647